श्री सुमतिनाथाय नमः

श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-जितेन्द्र-गुणरत्नसूरि सद्गुरूभ्यो नमः

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ

जैन श्वेताम्बर तीर्थ नाकोड़ा (मेवानगर)

Religious World

मुनि श्री ऋषभरत्नविजयजी म.सा.

फोटोग्राफी 3डी-2डी पिक्चर डिजाईनर

जैनिज्म ओनलाईन के श्री हितेशभाई शाह (मरोली)

श्री आध्यात्मिक

ज्ञान विकास कोश

विक्रम संवत् 2073

सम्पर्क सूत्र :: 99779-63694

जैन जीवन शैली

दिव्य कृपा सौंदर्य

सिद्धांत महोदधि पूज्य आचार्य
श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा.

युवा शिविर प्रणेता, पूज्य आचार्य
श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा.

मेवाड़ देशोद्धारक पूज्य आचार्य
श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

शुभाशीष कृपा सौंदर्य

सिद्धांत दिवाकर, पूज्य गच्छाधिपति
श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.

दीक्षा दानेश्वरी, पूज्य आचार्य
श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

प्रेरणा स्रोत

जैन शासन रत्न पूज्य अनुयोगाचार्य
श्री वीररत्नविजयजी म.सा.

तपस्वीरत्न पूज्य पंन्यास प्रवर
श्री पद्मभूषणविजयजी म.सा.

गुरू कृपा पात्र पूज्य पंन्यास प्रवर
श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.

अनुक्रमणिका

पेज नं.	विवरण
01	फ्रंट पेज
02	जैन जीवन शैली
03	धर्म की महत्ता हेतु 10 श्रेष्ठ उपमा
04	दान-शील धर्म
05	तप-भाव धर्म
06	मैत्री भावना
07	प्रमोद भावना
08	करूणा भावना
09	माध्यस्थ भावना
10	अनित्य, अशरण, संसार
11	एकत्व, अशुचि, अन्यत्व
12	आश्रव, संवर, निर्जरा
13	लोक स्वभाव, बोधि, धर्मदुर्लभ
	10,11,12,13 नं. पेज भावना के है
14	इन्द्रियाँ
15	22 अभक्ष्य
16	32 अनन्तकाय
17	धर्म कहाँ - पाप कहाँ ?
18	जैन दर्शन अनुसार
19	दया
20	पर्वों को मनाए अपूर्व रूप से
21	पर्वों को मनाए अपूर्व रूप से
22	उत्तर खोजती एक प्रश्नावली
23	क्या हम भूल सकते है ?
24	क्या हम भूल सकते है ?

卐 धर्म की महत्ता हेतु 10 श्रेष्ठ उपमा 卐

कल्पवृक्ष

भोजनादि देनेवाले कल्पवृक्ष पृथ्वी पर प्राप्त होते है । युगलिक मानवी इन वृक्षों से ही अपना जीवन यापन करते है किंतु धर्मरूपी कल्पवृक्ष तो धरती के ही नही स्वर्ग के और आगे बढ़कर मुक्ति सुख को भी देता है अतः धर्म कल्पवृक्ष अपूर्व है।

चिंतामणी

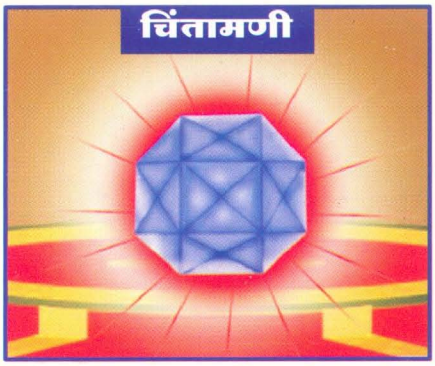

चिंतामणी जिसके हस्त में.... दुनिया की पूरी संपत्ति उसके हाथ में है क्योंकि वह उस मणि से इच्छित प्राप्त कर सकता है किंतु धर्म चिंतामणी का असर तो परलोक तक, रत्न की मर्यादा इस भव तक जबकि धर्म तो भवोभव तक।

निधान-भंडार

जिसके पास निधान उसे लीलालहेर किंतु यह निधान शाश्वत नहीं है। जबकि धर्म ऐसा निधान है जिसकी कृपा से सदा के लिए आनंद तथा यह निधान चिरस्थायी है।

अपूर्व बांधव

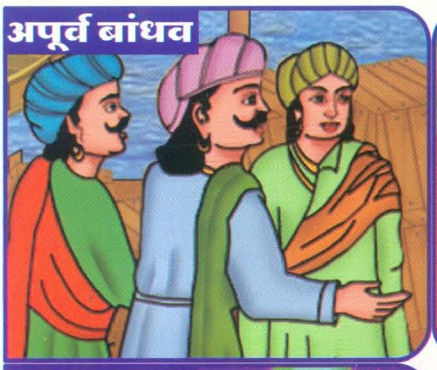

जो मुसीबतों में काम आता है वह बांधव जबकि हमेशा सहभागी बनने हेतु तत्पर एक मात्र धर्म है।

अपूर्व मित्र

आपत्ति का निवारण तथा संपत्ति के द्वार खुले रखता हो वह संसारी मित्र है किंतु वह मित्र समस्त सुखों को नही दे सकता जबकि धर्म ! सब कुछ देता है।

परम गुरू

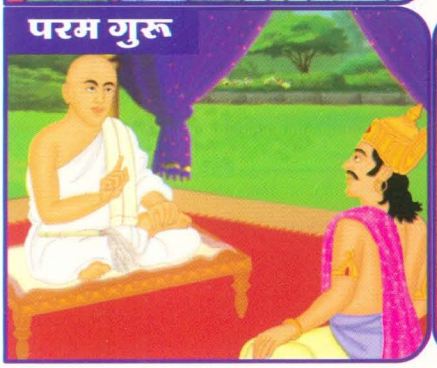

गुरू का काम अज्ञान दूर करना और ज्ञान देना है
गुरू इस भव तक ज्ञान देते है जबकि धर्म आनेवाले भव में भी प्रत्येकबुद्ध - स्वयंबुद्ध बनाकर ज्ञान देता है।

रथ

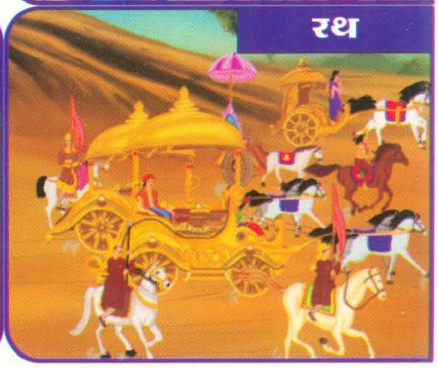

मार्ग पर व्यवस्थित ले जाने का काम रथ का होता है वह एक गांव से दुसरे गांव ले जाता है जबकि धर्म तो सद्गति और मोक्ष में भी ले जाता है
यह रथ रास्ते में टुटता या बिगड़ता नहीं है।

संबल

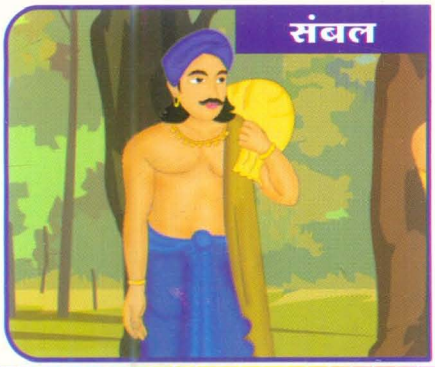

रास्ते में संबल दो-तीन दिन तक काम आता है जिन्दगीभर काम नही आता है जबकि धर्म संबल भवोभव तक काम आता है । तथा वह खराब नही होता है ओर दोषों को दूर करने वाला है।

रत्नसंचय

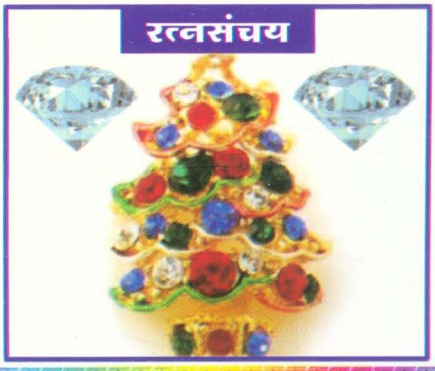

दुनियां के रत्नों को चोर चोरी कर सकते है राजा आदि का अधिकार भी उस पर होता है जबकि यह धर्म रूपी रत्न का संचय चोरी नही होता, नष्ट नही होता तथा कोई अधिकार भी नही जमाता।

सार्थवाह

सार्थवाह ! एक गांव से दूसरे गांव जाते रास्ते में आते जंगल-नदी-समुद्र-पहाड़ों को कुशलता पूर्वक पार करवाता है फिर भी राजा-पशु आदि का भय तो होता ही है किंतु धर्म सार्थवाह के बल से तो इहलोक-परलोक के भय दूर हो जाते है।

1. दान 2. शील धर्म

दिया जाता है वह – दान

दान अनेक प्रकार से शास्त्रों में दर्शाया है।
मुख्य पाँच प्रकार से दान धर्म विभाजित किया गया है। जिसमें –
1.अभयदान, 2. सुपात्रदान, 3.अनुकम्पादान, 4.उचितदान, 5. कीर्तिदान

उचितदान

अवसर, प्रसंग उचित जो दिया जाता है वह उचित दान। वस्तुपाल तेजपाल आदि ने अनेकबार प्रसंग पाकर अजैनों को भी जैन शासन की प्रभावना हेतु दान दिया था।

सुपात्रदान

पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वीजी भगवंतों को जो निर्दोष आहार दिया जाता है वह सुपात्रदान है। गुरू हमें सही रास्ता (मार्ग) दिखानेवाले है ऐसे उपकारी सद्गुरू भगवंतों को दिया जाने वाला सुपात्रदान मोक्ष हेतु होता है। जैसे संगम, चन्दना ...।

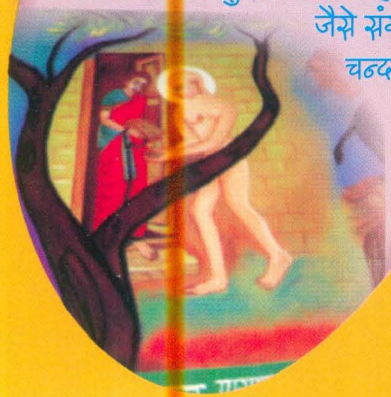

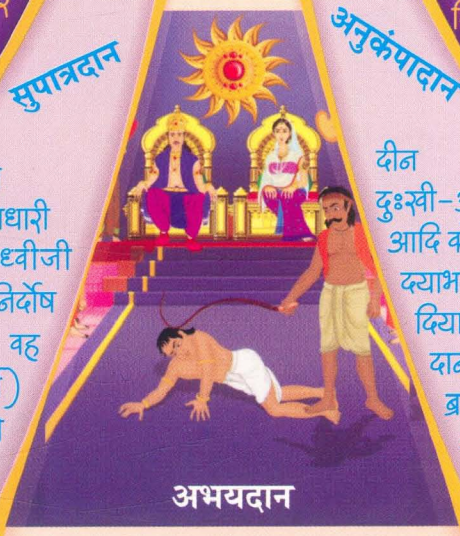

अभयदान

भय से दुःखी जीवों को भयमुक्त करना। प्राणों की रक्षा करना अभयदान है। जीव के प्राणों को नष्ट करना हिंसा है। अभय देनेवाला सबकुछ देता है। प्राण लेनेवाला सबकुछ हरण करता है। 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' जैसे हमें प्राण प्रिय है वैसे सभी जीवों को भी प्राण प्रिय है तथा सुख की तमन्नावाले हैं। जैसे रानी ने चोर को अभयदान दिया।

अनुकंपादान

दीन दुःखी-अनाथ आदि को देखकर दयाभाव पूर्वक जो दिया जाता है वह अनुकंपा दान। (प्रभु वीर ने ब्राह्मण को अर्ध वस्त्र दान दिया था।) जैसे जगडूशाह सेठ।

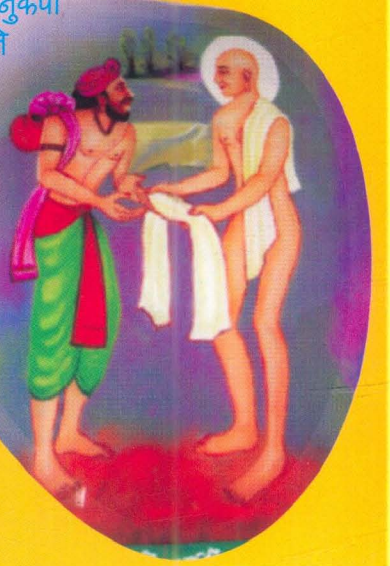

कीर्तिदान

यश कीर्ति हेतु जो राजा महाराजा-श्रेष्ठी आदि के द्वारा दिया जाता है वह कीर्तिदान। जैसे राजाभोज ..।

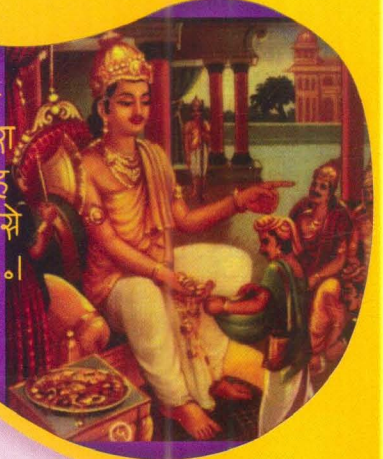

अभयदान तथा सुपात्रदान से मोक्ष गति की प्राप्ति होती है।
शेष तीन दान संसार संबंधित सुख-यश-कीर्ति आदि दिलानेवाले है।

शील धर्म

महाव्रत - अणुव्रत आदि का पालन करना शीलधर्म है।
व्रत रक्षा हेतु - शील रक्षा हेतु मृत्यु भी श्रेष्ठ है, वीरता है किंतु उसका भंग हमे कतई नहीं करना चाहिए। जैसे सुदर्शन आदि ...।

3. तप धर्म
4. भाव धर्म

6 बाह्य तप

अनशन
शक्ति अनुसार उपवास आदि तप करना। चार प्रकार के अशन-पान-खादिम-स्वादिम चीजों का त्याग।

उणोदरी
अपने भोजन के प्रमाण से कुछ न्यून वापरना। अर्थात् 4 रोटी की बजाय 3 वापरनी।

वृत्तिसंक्षेप
खाने के द्रव्यों में संक्षेप करना। अर्थात् 20 या 25 इत्यादि द्रव्यों से ज्यादा नहीं वापरना।

रस त्याग
दुध-दही-घी-तेल-गुड़-पकवान रूप विगईयों में किसी भी विगई का त्याग करना या संपूर्ण त्याग करना।

काय क्लेश
शरीर को पैदल तीर्थयात्रा केश लुंचन इत्यादि धर्म-क्रिया द्वारा क्लेश होता है वह काय क्लेश रूप तप है ... कर्मों की निर्जरा होती है।

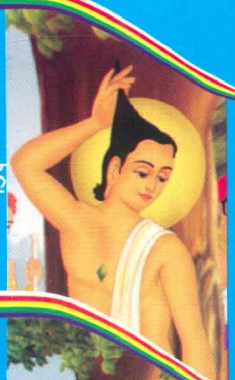

संलीनता
बिना कारण के अंग - उपांगों को हिलाना नहीं। एक जगह संलीनता पूर्वक नियम अनुसार टिककर के बैठना।

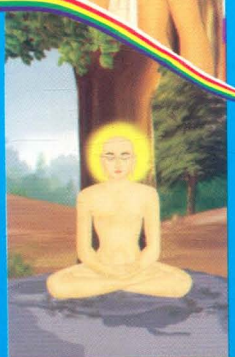

6 अभ्यंतर तप

प्रायश्चित
जीव के द्वारा हुये पापों को योग्य, गीतार्थ गुरू भगवंत के पास जाकर प्रगट करना और उसका प्रायश्चित लेना।

विनय
गुणादि से उच्च कक्षा में रहे हुए देव गुरू आदि का विनय करना।

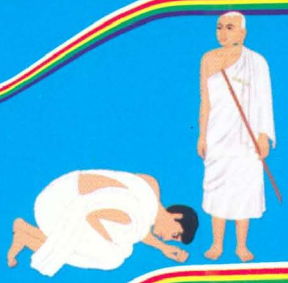

वैयावच्च
गुणवंतों की, तपस्वीयों की सेवा करना।

स्वाध्याय
जीव-अजीव आदि नवतत्वों की बातें जिसमें आती हो ऐसी पुस्तकों का स्वाध्याय चिंतन मनन करना।

ध्यान
परम उपास्य देव आदि तत्व का आलंबन लेकर ध्यान करना, जाप करना।

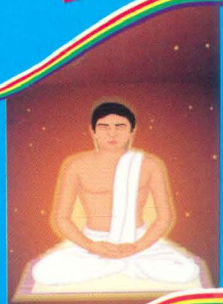

कायोत्सर्ग
मन-वचन-काया से स्थिर होना। प्रवृत्ति का त्याग करके कायोत्सर्ग में हिलना - चलना नहीं।

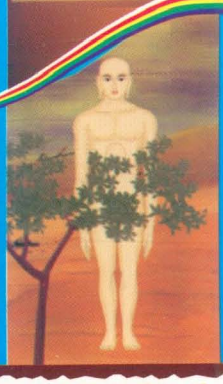

भाव धर्म

चार प्रकार के धर्म में चौथा भाव धर्म सर्वोत्कृष्ट बताया है। दान-शील तथा तप, बिना भाव के किये हुए वास्तविक फल देने में असमर्थ है अतः जिन प्रणित सारे अनुष्ठान भाव पूर्वक करना चाहिए। जैसे पेथड़शा प्रभु पूजा में मस्त बन गये।

मैत्री भावना

तीर्थंकर परमात्मा की मैत्री भावना उच्च पराकाष्ठा की होती है, जगत के तमाम जीवों को तारने की भावना से युक्त होते हैं।

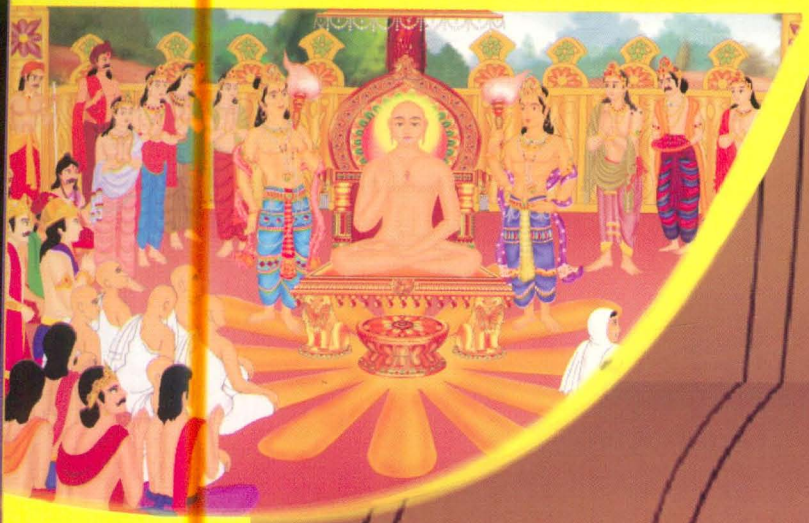

मेघ कुमार ने पूर्व के हाथी के भव में ढाई दिन तक पाँव ऊँचा रखकर एक छोटे से खरगोश को जान के जोखम से बचाया था।

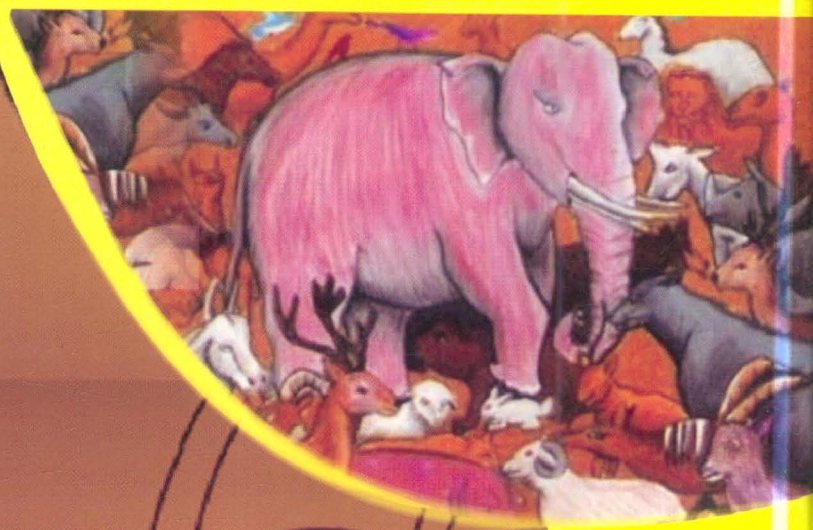

धर्म ध्यान को पुष्ट करने हेतु चार प्रकार की भावनाएँ है, जिसमें सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना किसी को भी शत्रु नही मानना तथा अवसर आने पर कट्टर शत्रु पर भी उपकार करना यह प्रथम मैत्री भावना है। हम किसी को जीवन दे नहीं सकते तो किसी का जीवन लेने का अधिकार भी हमें नहीं है। पूर्व में अनन्त काल तक अनन्त जीवों के साथ हमने अनन्त समय निगोद में बिताया है तो अब छोटी सी जिंदगी में शत्रुभाव क्यों धारण करें? हमारे संबंध उपयोगिता के नहीं अपितु आत्मीयता के होने चाहिए।

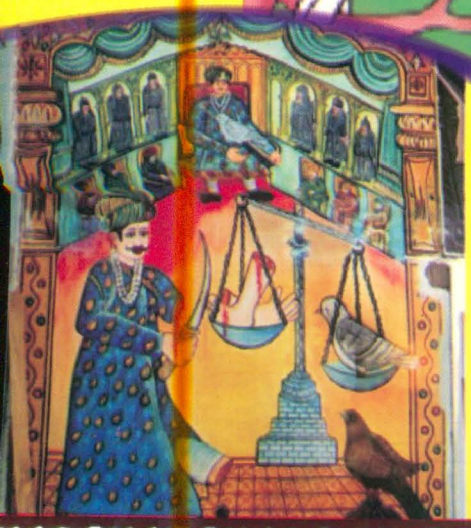

श्री शांतिनाथ भगवान ने पूर्व के मेघरथ राजा के भव में शिकारी पंखी से कबूतर की रक्षा हेतु अपना पूरा शरीर न्यौछावर कर दिया था।

शांत-प्रशांत साधक आत्मा के प्रभाव से वैरी पशु-पंखी भी अपने वैरभाव भूल जाते है। जैसे बलभद्र मुनि-जंगली पशु।

卐 प्रमोद भावना 卐

गुणीजनों को देखकर प्रसन्नता का एहसास करना।

शीलयुक्त तपस्वी, दानी आदि गुणों से युक्त व्यक्ति को देखकर अनुमोदना करनी।

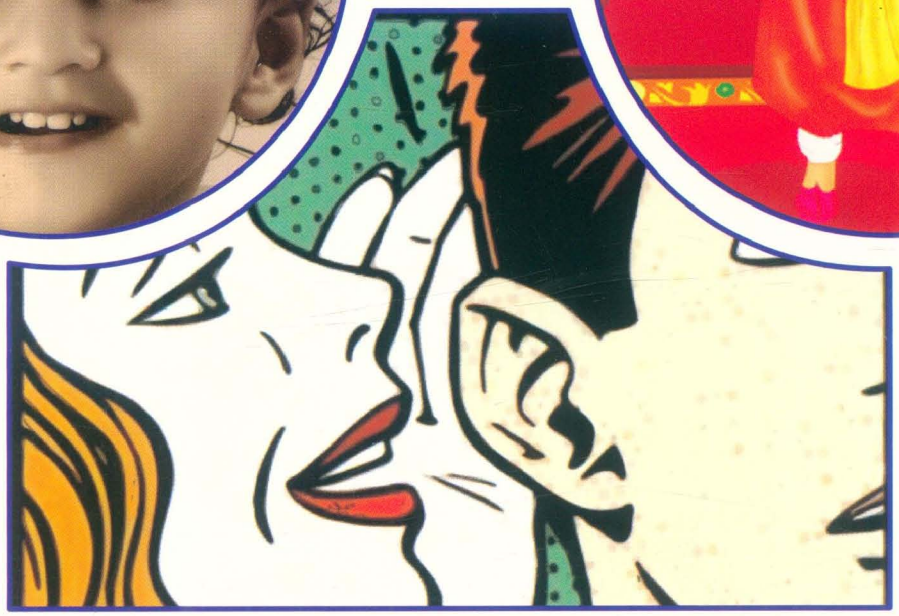

हमारे से उपर, आगे बढ़े हुए गुणीजन को देखकर आनंद विभोर होना चाहिये। ईर्ष्या तथा निंदा करने से गुण चले जाते है। अवगुण प्रगट होते है। जीवन में अच्छा सुनना, अच्छा देखना और अच्छा बोलना चाहिए गुणवान व्यक्ति तथा दानी-तपस्वी आदि मिलने पर विचारना कि मुझे भी ऐसी शक्ति कब मिले ? प्रमोद भावना युक्त सामने वाले व्यक्ति के गुणों को देखेगा।

खराब सुनना बंद करें।
खराब देखना बंद करें।
खराब बोलना बंद करें।

कृष्ण गुणानुरागी थे अतः मरे हुए सुअर की दुर्गंध से परेशान लोगों के बीच में भी सुअर के उज्जवल दाँतों की तारिफ करी।

करूणा भावना

उपसर्गकर्ता पर भी प्रभु की करूणा आँखो से अश्रु के बूंद .... इसका क्या होगा ?

रोग ग्रस्त बिमार जीवों को देख कर उसके दु:खों को दूर करने हेतु प्रयास करना यह द्रव्य करूणा

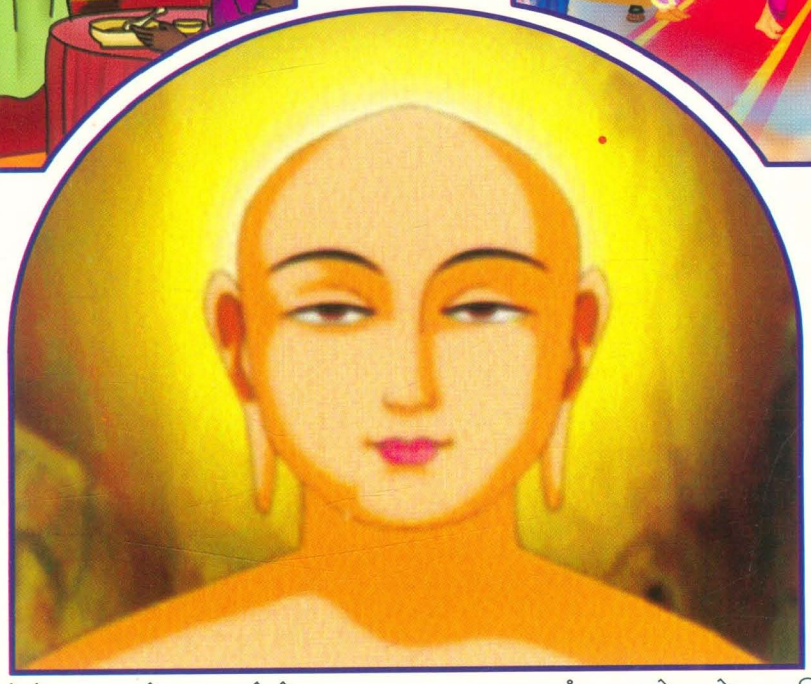

जर-जोरू-जमीन के पीछे पागल बने जीवों का क्या होगा ? उपदेश देकर सही मार्ग पर लाना यह भाव करूणा

दुसरे जीवों के दु:खों को देखकर उसे दूर करने हेतु प्रयासरत बनना। मरणांत कष्ट रोग शोक आदि से ग्रस्त जीवों को उन दु:खों से मुक्त करना द्रव्य करूणा तथा धर्म रहित अधर्म में निरंतर लगे हुए जीवों को देखकर उनकों धर्म की राह पर लाने का प्रयास करना यह भाव करूणा है। जिससे उन जीवों को भावी में प्रगट होनेवाले दु:खों से तथा दुर्गति से छुटकारा मिलता है।

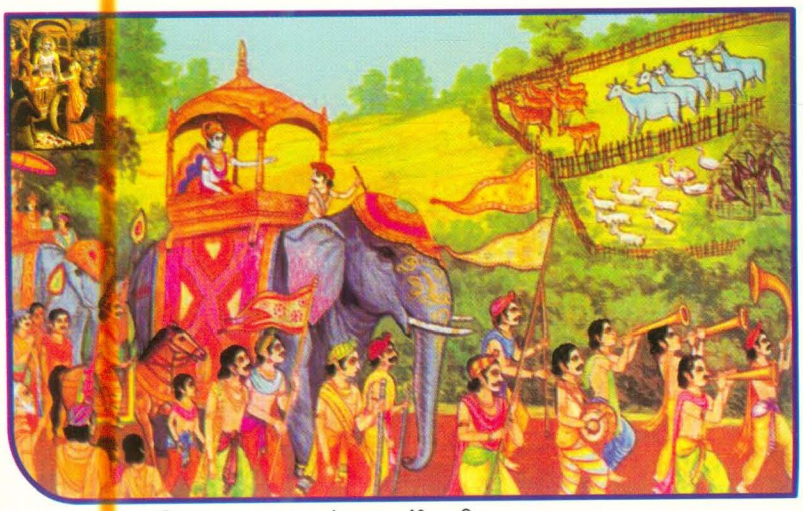

श्री नेमिनाथ भगवान ने पशुओं की भावना सुनकर रथ मोड़ दिया। राजीमती के साथ शादी किये बिना ही गिरनार तीर्थ पर दीक्षा ले ली।

कुमारपाल महाराजा के पाँव पर मकोड़ा चिपक गया उसे निकालते वक्त उसका दु:ख देखकर चमड़ी सहित मकोड़े को निकाल दिया।

माध्यस्थ भावना

सुगरी ने वानर को उपदेश दिया तो वानर ने उसका ही घर-माला तोड़ दिया।

गौशाले के प्रति वीर प्रभु का माध्यस्थ भाव।

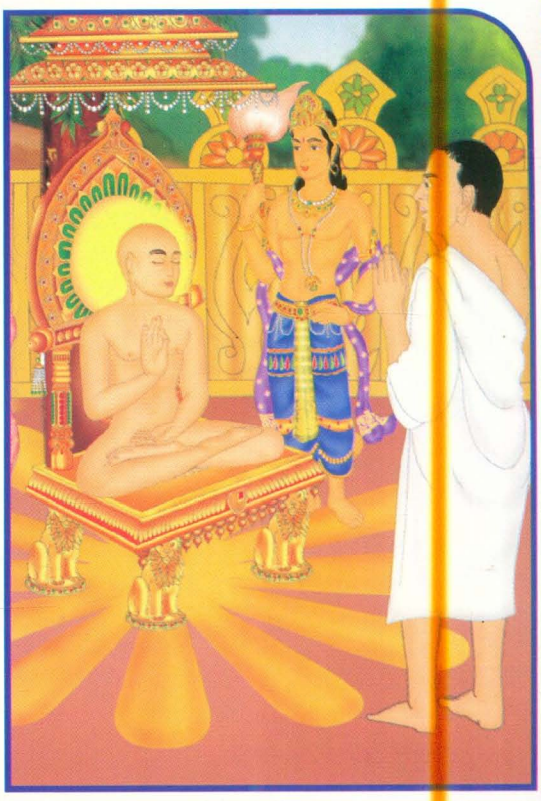

प्रभु वीर ने जमाई जमाली को समझाया फिर भी वह नहीं माना तो प्रभु ने माध्यस्थ भाव रखा।

दोष-पाप युक्त जीवन जीनेवाले को समझाने के बावजूद भी न माने तो उनकी उपेक्षा करना। सुधारने के बावजूद भी न सुधरे तो उनकी उपेक्षा करना। लेट-गो करना अन्यथा वह हठीला बन जाता है। आपको उसके प्रति दुर्भावि होगा अतः माध्यस्थ भाव रखना।

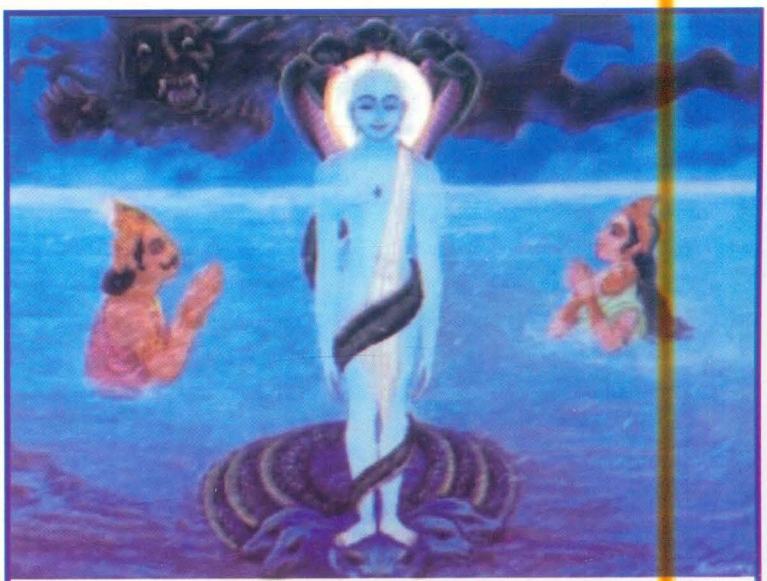

धरणेन्द्र द्वारा की जाती उपासना
तो दुसरी ओर कमठ द्वारा किए जाते उपसर्ग में भी तुल्य भाव
धारण करनेवाले राग-द्वेष मुक्त श्री पार्श्वनाथ प्रभु।

अनित्य

कायम टिकनेवाला नहीं है

सम्बन्ध
सम्पत्ति
स्वास्थ्य
शरीर
सुख

शाश्वत नहीं है तो हम राग-द्वेष क्यों करें ?

आज

कल

राजा

भिखारी

स्वास्थ्य

बिमारी

जवानी बुढ़ापा

सुख

दुःख

आरीसा भवन में भरत महाराजा के अंगुली से अँगूठी गिरी ..... शरीर की शोभा बाह्य पदार्थों में है। जो शोभा एक दिन अवश्य नष्ट होनेवाली है। अनित्य भावना भाते केवलज्ञान हुआ।

सुख से फुलना, दुःख से मुझाना मत ...
पुष्पित पुष्प (फूल) शाम को मुझति देखे है।
सुख भी क्षणिक तो दुःख भी क्षणिक है।

अशरण

हमें दुनिया में हमेशा के लिए बचा नहीं सकते

दुःख से

दर्द से

रोग से

दुश्मनों से

संसार में कोई सच्चा शरण देनेवाला नहीं है।
यूं सोच अनाथिमुनि ने दीक्षा ली साथ में
श्रेणिकराजा को भी बोध दिया।

डॉक्टर-दवाई-सैनिक बचाते है
टेम्परसी सुख प्रदान करते है
किंतु परमानेन्ट सुख तो
देव-गुरू-धर्म की शरण से प्राप्त होता है।

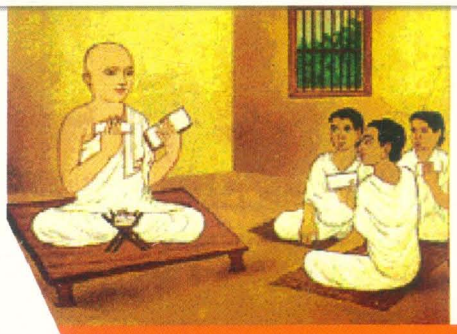

12 भावना (अनुप्रेक्षा)

सांसारिक तमाम वस्तु जीवों को शरण देने में समर्थ नहीं है, डुबा हुआ दुसरे को कैसे उबार सकता है।
स्वयं नष्ट होता हो वह पदार्थ को शाश्वत कैसे कर सकता है ?
सच्चा शरण एकमात्र देव-गुरू तथा धर्म का है।

संसार

संसार में रही हुई असारता देव-मनुष्य-तिर्यंच-नरकगति रूप संसार में जीव कर्म वश परिभ्रमण करता है। विष से ग्रस्त व्यक्ति को कडुआ नीम भी मधुर लगता है वैसे मोहविष से ग्रस्त जीवों को दुःखमय संसार भी सुहाता है अतः एव जीव दुःखों से ग्रस्त बनकर संसार में भटकते है।

संसार में लिप्त जीवों को दुःखी देखकर तथा धर्म से युक्त जीवों की सद्गति यावत् मुक्ति जानकर एक धर्म ही कर्तव्य है।
संसार में सारभूत श्री जिनधर्म ही है।

एकत्व

जीव आया तब अकेला
जायेगा तब भी अकेला
आया लेकर खाली हाथ
जायेगा लेकर खाली हाथ ॥
यह मेरा मैं इसका मालिक
यह सब चीजे है क्षणिक
न चलेगी साथ तेरे यहाँ से
आया तब लाया था कहाँ से ?

नमि राजर्षि को बिमारी में बोध हुआ ..!
जहाँ अनेक है वहाँ कलेश है - आवाज है।
जहाँ एक है वहाँ सुख है - शान्ति है।

तेरा साथी कोन है ?

अशुचि

गंदे शरीर में हम क्यों बंधे है ? शरीर अशुचि एवं अपवित्रता का भंडार है । आज जिसे हम बार-बार संवारते है वह शरीर क्षीण होने के स्वभाववाला है अशुचि से भरा हुआ है, मेक-अप करने के बाद भी कुछ समय के पश्चात् इसमें से बदबू आती है ऐसे शरीर पर हमें मोह क्यों करना ? गौरी चमड़ी के नीचे गंदगी दबी हुई है । चमड़ी छिद्र, नाक-कान-आँख-मुँह-गुदा आदि से मल क्लेष्म पसीना आदि निकलता रहता है।

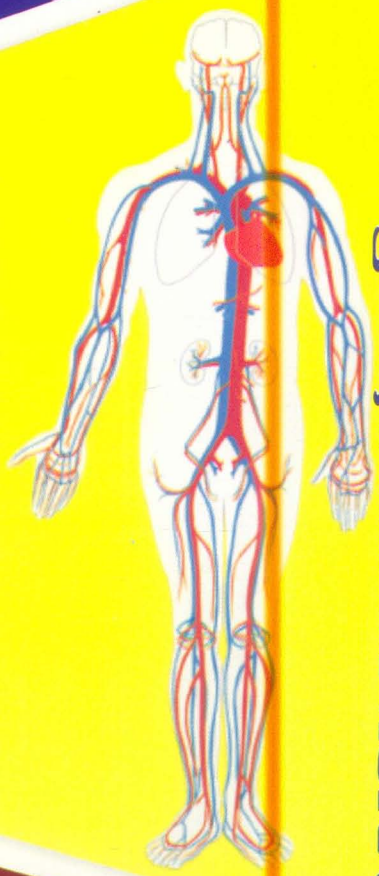

शरीर अशुचि एवं मल का भंडार है

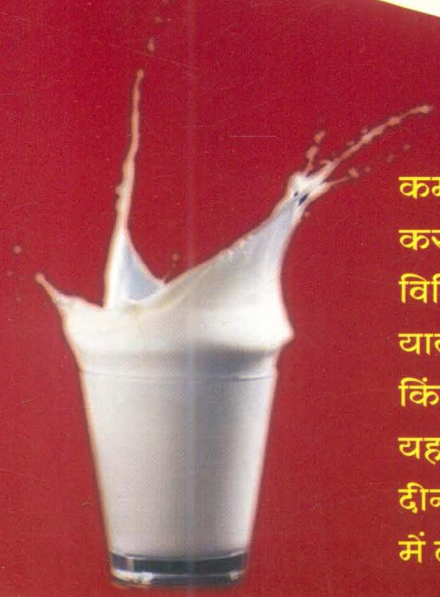

कर्मों से लिप्त जीव शरीर प्राप्त करते है । शरीर के कारण विविध प्रकार की वेदना यातना भुगतनी पड़ती है किंतु आत्मा देह से भिन्न है यह विचारधारा हमें दुःख में दीन नहीं बनायेगी तो सुख में लीन नहीं बनने देगी।

''मैं शरीर से भिन्न हूँ
तो शरीर मेरे से भिन्न है।''

अन्यत्व

आश्रव

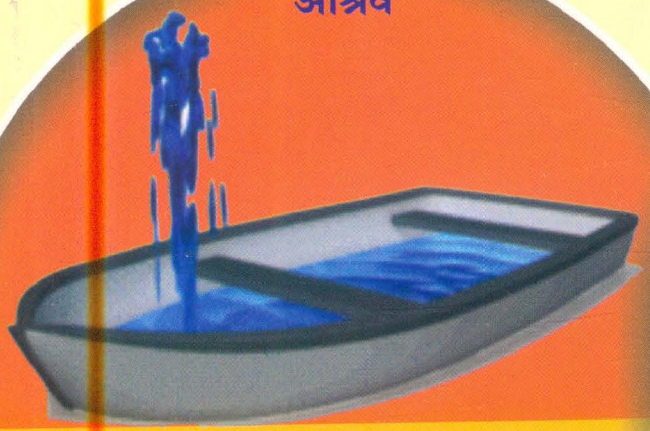

संसार में स्थित प्राणीयों को निरंतर अविरति-मिथ्यात्व-प्रमाद-कषाय तथा योग के कारण कर्म का आश्रव होता है। यह आश्रव जीव को दुःख देने वाला है प्रभु द्वारा उपदिष्ट विरति-नियम-पच्चक्खाण के द्वारा आते हुए इन कर्मों को हम रोक सकते है। पुण्य - पाप दोनों परमार्थ से आत्मा को अहितकर है।

संवर

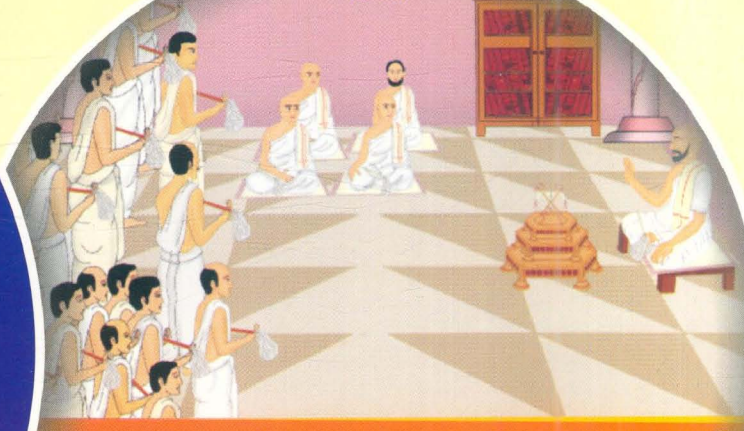

संवर कर्मों को रोकने का उपाय है। सामायिक प्रतिक्रमण इत्यादि क्रिया के द्वारा जीव पर आते हुए कर्मों को रोक सकते है। नाव में छिद्र के द्वारा पानी का आगमन होता है वहीं छिद्र को ढकने से संवरित करने से आता हुआ पानी रूक जाता है। सम्यग दर्शन-ज्ञान-चारित्र द्वारा मिथ्यात्व आदि आश्रव द्वार रूकते है।

निर्जरा

निर्जरा यानि कर्मों को साफ करना। नाव में घूंसे हुए प्रविष्ट पानी को उलचना। तप के द्वारा बंधे हुए कर्मों को साफ किया जाता है। तप एक अद्वितीय शस्त्र है जो निकाचित तो अनिकाचित कर्मों को भी काटता है। यह तप बारह भेद से विभिन्न बताया गया है।

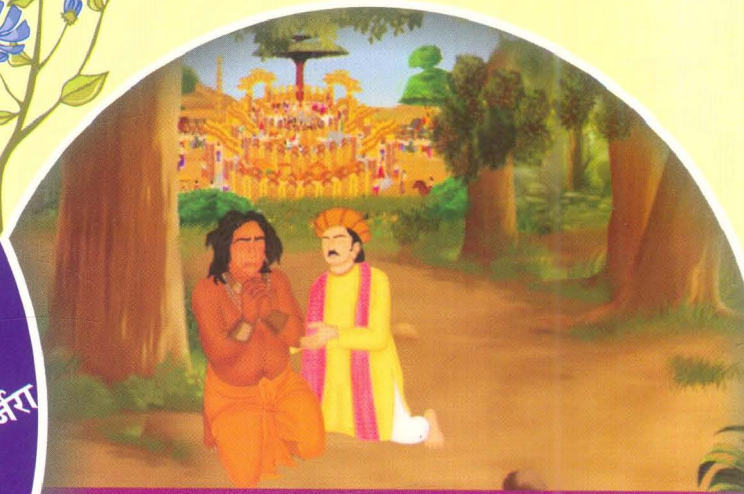

अर्जुनमाली यक्ष के प्रविष्ट हो जाने के पश्चात् प्रतिदिन जो पंचेन्द्रिय मनुष्यों का घात करनेवाला घोर पापी था। प्रभु उपदेश से प्रतिबुद्ध होकर संयम का स्वीकार किया। तप - तपकर कर्मों का सफाया किया ... और मुक्ति सु ख को प्राप्त कर गया।

लोक स्वभाव

संपूर्ण जगत का चिंतन करना, विश्व छः द्रव्यों के समूह से अवस्थित है । देव-नारक-मनुष्य तथा पशु जहाँ रहे हुए है। लोक की विचारधारा हमारे मन को एकाग्र बनाती है। विश्व का चिंतन हमें बोध प्रदान करता है सम्यक बोध से शोध होती है, शोध से शुद्धि होती है।

विश्व 14 राजलोकमय है, दुनिया से बहार अलोक है, विश्व में उर्ध्वलोक - मध्यलोक तथा अधोलोक आया हुआ है।
दुनिया का आकार कैसा ?
तुम खड़े रहो, दो पैर चौड़ा करो और दोनों हाथों को कमर पर टिका दो।

लोक को किसी ने बनाया नहीं है, किसी ने टिका के रखा नहीं है तो न कोई इसका नाश कर सकता है। अनादि अनन्तकाल से है और रहेगा।

जैसे शिवराजर्षि को विभंग ज्ञान से विपरित ज्ञान हुआ था प्रभु ने सही तत्व दिखाया।

बोधि दुर्लभ

प्रभु ऋषभ ने सभी पुत्रों को समझाया कि यह धर्मरत्न की प्राप्ति बड़ी मुश्किल से होती है। धन-राज्य से कभी तृप्ति नहीं होती ... इस रत्नत्रयी को ही स्वीकार करने हेतु उद्यम करना चाहिये।

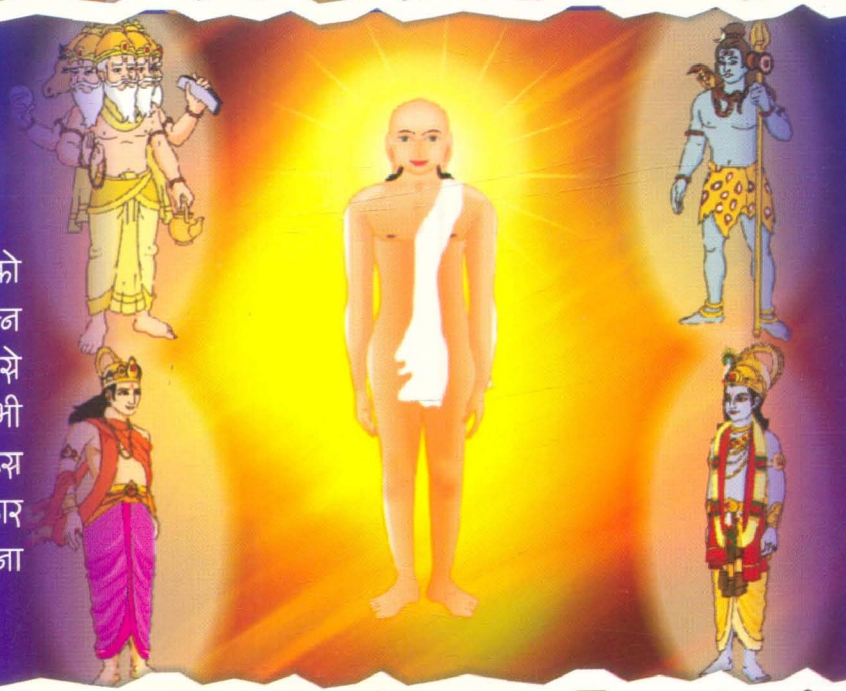

अन्य देवी देवता को छोड़कर वीतराग प्रभु पर श्रद्धा।

रत्नत्रयी की प्राप्ति दुर्लभ
संसार में विविध गतियों में, चौरासी लाख योनियों के अंदर भटकते जीव को सद्धर्मरत्नों की प्राप्ति दुर्लभ है। सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र की प्राप्ति अनंत पुण्य राशि एकत्रित होने पर होती है।

मिथ्या दृष्टि मंद कषाय से नवग्रैवेयक तक जाते है किंतु यथार्थ स्वानुभव करके समझा नहीं अतः बोधि प्राप्ति दुर्लभ है।

धर्म दुर्लभ

धर्म दुर्गति में गिरते प्राणी को जो बचा लेता है तो साथ में सद्गति में स्थापित करता है।
धर्म इस जगत में उत्कृष्ट मंगल है, धर्म हमारे लिए कल्याणकारी है
धर्म सभी जीवों का परम हितकारी है
जीव धर्म की शरण से मोक्ष सुख को प्राप्त करता है।

धर्म के प्रभाव से सुख की प्राप्ति तथा अनुकूलताएं मिलती है। संसार में जितना भी सुख मिल रहा है वह पूर्व भव में किया हुआ धर्म का प्रभाव समझना चाहिए। एक बार गँवाने पर पुनः मिलना दुर्लभ है।

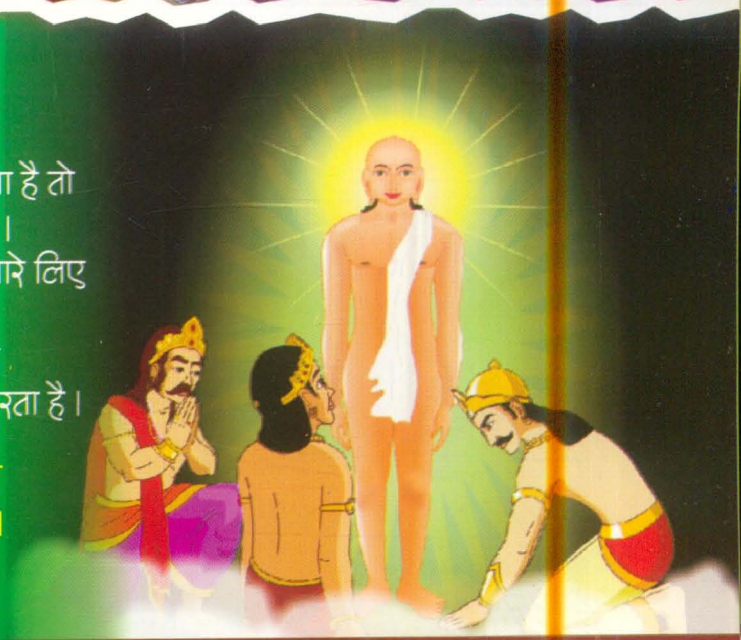

पांच इन्द्रिया

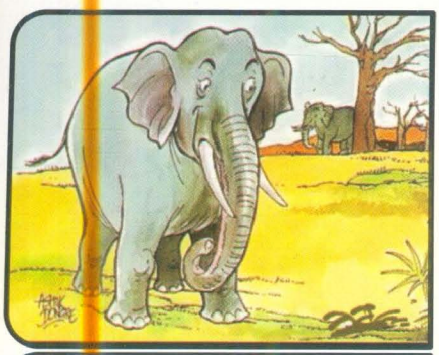

हाथी हाथिनी को देख कर आकर्षित होता है। उसे पाने के लिए भागता है बीच में खड्डा आने से गिरता है और महावत के बंधन को प्राप्त करता है।

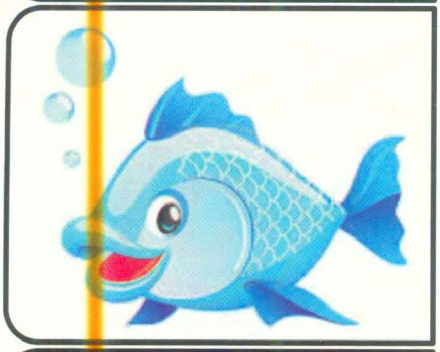

रसनेन्द्रिय में आसक्त मछली आटे की गोली को खाने के लालच में अंदर रहे कांटे में बिंधती है और मृत्यु को प्राप्त करती है।

सुंघने में आसक्त बना भंवरा कमल में सूर्यास्त के पश्चात् बंद हो जाता है और हाथी उस कमल को उखाड़ कर नष्ट करता है।

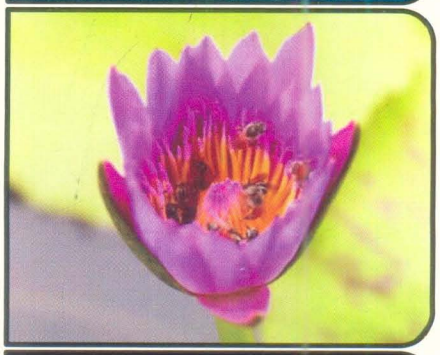

दिपक की ज्योत को देखकर तीतली उसे पाने हेतु निकट पहुँचती है और दिपक की ज्योत में स्वाहा हो जाती है।

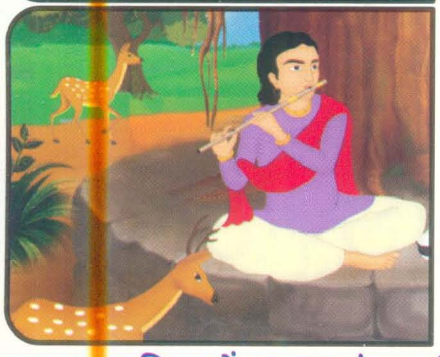

शिकारी द्वारा सुनाये गये मधुर वाद्य यंत्रो के कर्ण प्रिय नाद को सुनकर हिरण बंधन को प्राप्त करते है।

एक-एक इन्द्रिय में आसक्त बंधन और मृत्यु को प्राप्त करते हैं तो पाँचों इन्द्रियों में आसक्त है उनका क्या होगा ?

बावीस अभक्ष्य

शहद

मक्खन

मांस

मदिरा

बर्फ

ओले

जहर

मिट्टी

गिला अचार

रात्रि भोजन

द्विदल

चलित रस

बहुबीज

बेंगन

तुच्छ फल

अनजान फल

बड़ के टेटे

पीपल के टेटे

उंबरा के टेटे

काले उंबरे के टेटे

प्लक्ष की टेटी

अनन्तकाय

22 अभक्ष्य के अंतर्गत 4 महा विगई शहद-मक्खन-मांस-मदिरा, 4 तुच्छ चिजें बर्फ-ओले-जहर-मिट्टी, 4 संयोजित अभक्ष्य-गिला अचार (कड़ी धूप मे सुखाया नहीं हो एसे कच्चे आम आदि के टुकड़े का अचार)-रात्रि भोजन- द्विदल (कच्चे दूध-दही-छास के साथ में दलहन मिलने से जीव उत्पत्ति होती है) चलित रस (बासी भोजन-स्वाद जिसका बिगड़ गया हो ऐसी मिठाईयां पकवान आदि) 4 फल बहुबीज-बेंगन-तुच्छ फल (सीताफल, बैर आदि जिसमे खाना कम और फैकना ज्यादा हो)-अनजान फल, 5 प्रकार के बड़ वृक्ष के फल ? (इनके फलों में अनेक उड़ते त्रस जीव पाये जाते है।) अनन्तकाय (जिसमें अनन्त जीव है जैसे जमीकंद-काई आदि)।

बत्तीस अनन्तकाय

हरी हल्दी

हरा अदरक

सूरण कंद

शतावरी की बेल

गुवार पाठा

थुअर

लहसुन

गाजर

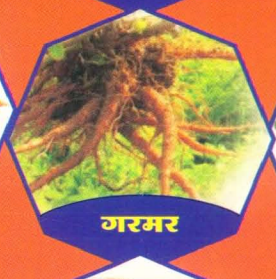
गरमर

मुली के पांचों अंग

भूमि कंद

मशरूम

कोमल ईमली

वज्र कंद

हरा कचुरा

विराली की लता

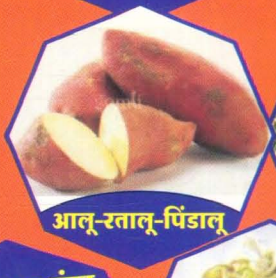
आलू-रतालू-पिंडालू

वत्थुला की भाजी

बांस करेला

लुणी

गिलोय

लोढक

किसलय

खिरसुआ कंद

थेग

लुण वृक्ष की छाल

हरी मोथ

खिलोड़ा कंद

सुअर वल्ली

अंकुरित धान

अमृत वेल

पाक भाजी

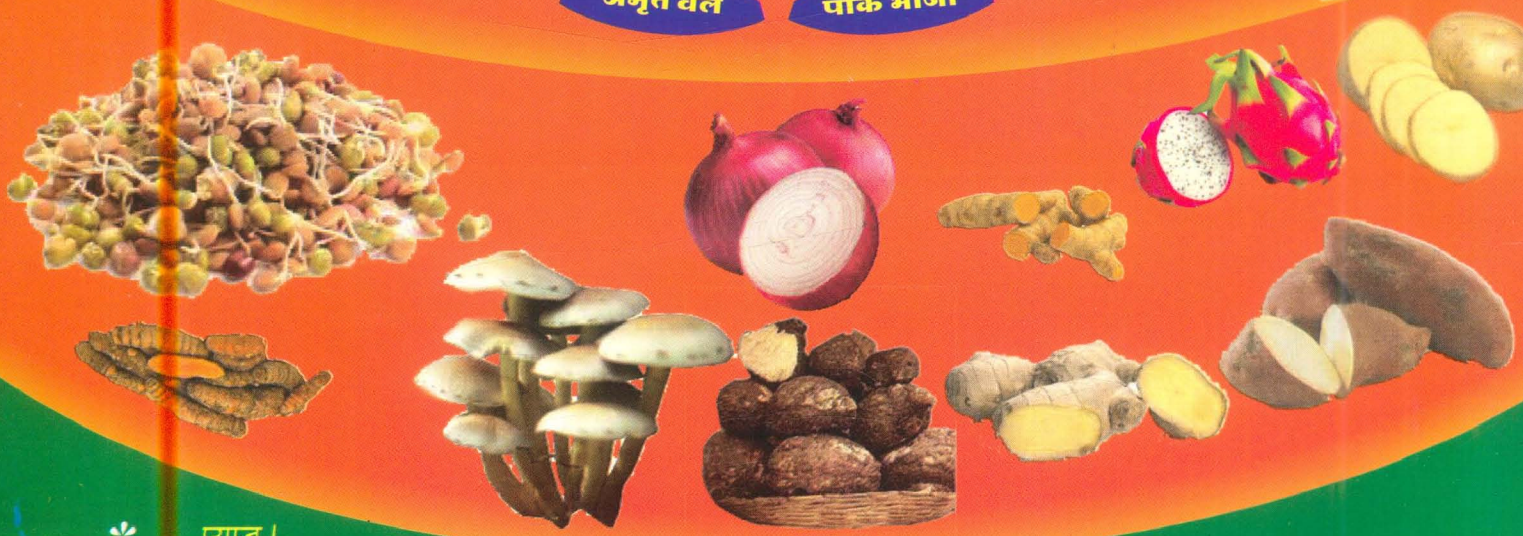

अन्य भी....

* प्याज।
* पालक की भाजी।
* खाद्य पदार्थ पर होती फफूंद।
* आलू की चिप्स इत्यादि का भी त्याग करना।
* उगती हुई सभी वनस्पति पूर्व में अनंतकाय होती है।
* वर्षा आदि का पानी पड़ा रह जाने से उस जगह हो जाती काई।
* लड्डू आदि भी तोड़कर - देखकर वापरना चाहिए अन्यथा अंदर फफूंद की संभावना है।
* गूढ़-गुप्त शिरा, गुप्त संधि, गुप्त पर्व, तोड़ने पर समान भाग, पत्तों में दूध इत्यादि अनन्तकाय के लक्षण दिखाये है।

अनन्तकाय वनस्पतियाँ

卐 धर्म कहाँ और पाप कहाँ ? 卐
पहचानों

टीवी, सिनेमा देखना

होली खेलना

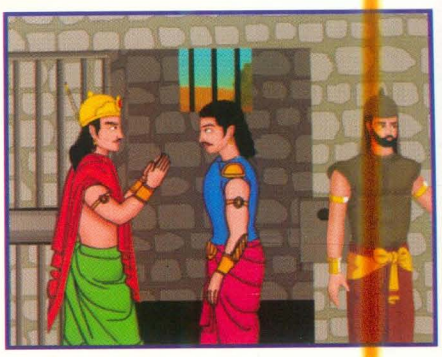

क्षमा करना

प्रभु पूजा करना

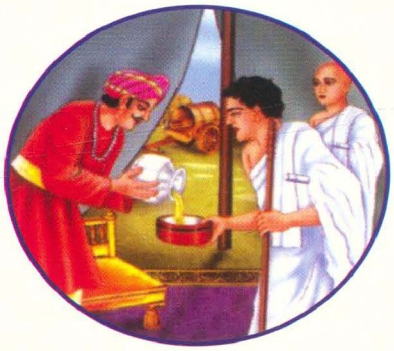

सुपात्र दान

गुरू आदर, वन्दन

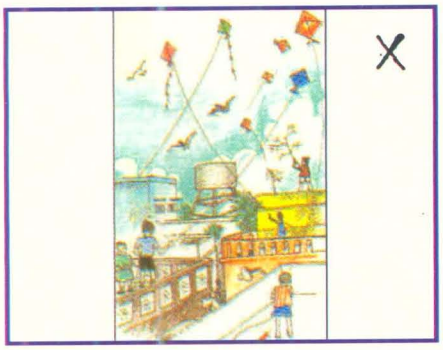

पतंग उड़ाना

फटाके फोड़ना

स्वीमिंग करना

दुःखी की सेवा

तीर्थ यात्रा करना

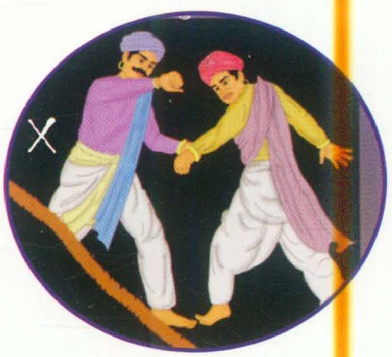

लड़ाई करना

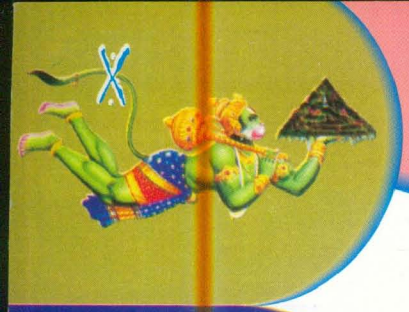

卐 जैन दर्शनानुसार 卐

सही जानिये .... समजिये....

01 जैसे वानर को पूंछ और विकृत मुख है वैसे **हनुमान** के पूंछ और विकृत मुख नहीं था।

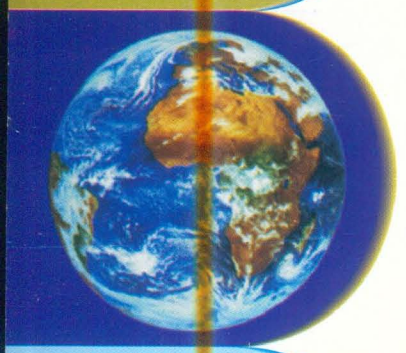

02 जैसे राम को एक मस्तक वैसे **रावण** को भी एक मस्तक था।

03 जैसे बाल नारंगी की तरह गोल है वैसे **पृथ्वी** थाली की तरह गोल है।

04 जैसे भव्य जीवों में मोक्ष में जाने की योग्यता है वैसे अभव्य जीवों में **मोक्ष** में जाने की अयोग्यता है।

05 प्रभु वीर ने जिस तरह से चंडकौशिक को प्रतिबोधित किया था मुनिसुव्रतस्वामी ने उसी तरह से **अश्व** को प्रतिबोधित किया।

06 जैसे तीर्थंकर की माता 14 स्वप्न देखती है वैसे ही **चक्रवर्ती** की माता 14 स्वप्न देखती है।

07 जैसे धर्म करनेवाले देवलोक में वैसे पाप करने वाले **नरक** में जाते है।

08 जैसे नरक सात है वैसे **देवलोक** बारह है।

09 शत्रुंजयगिरि के कंकर-कंकर से अनंत आत्माएँ मोक्ष में गई है वैसे इस अवसर्पिणी काल में 20 करोड़ मुनि के साथ **5 पाण्डव** भी मोक्ष में गये है।

10 जैसे शत्रुंजयगिरि शाश्वत है वैसे **मेरू** गिरि भी शाश्वत है।

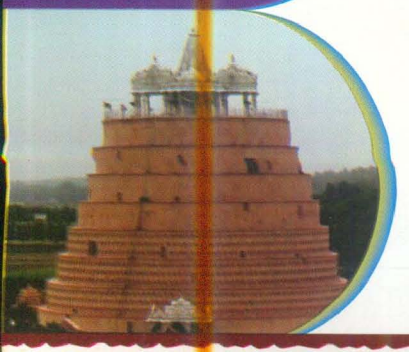

11 जैसे धन्नाशा ने राणकपुर तीर्थ में जिन मन्दिर का निर्माण करवाया वैसे भरत चक्रवर्ती ने **अष्टापद** पर जिन मन्दिर का निर्माण करवाया है।

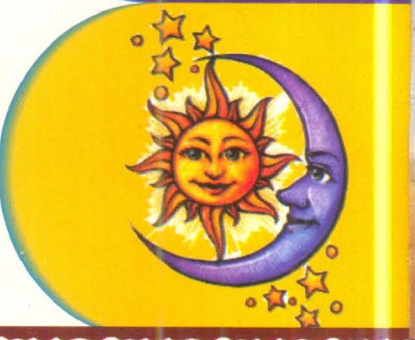

12 जम्बूद्वीप में **सूर्य** और **चन्द्र** 2-2 है।

धर्म का मूल है - दया

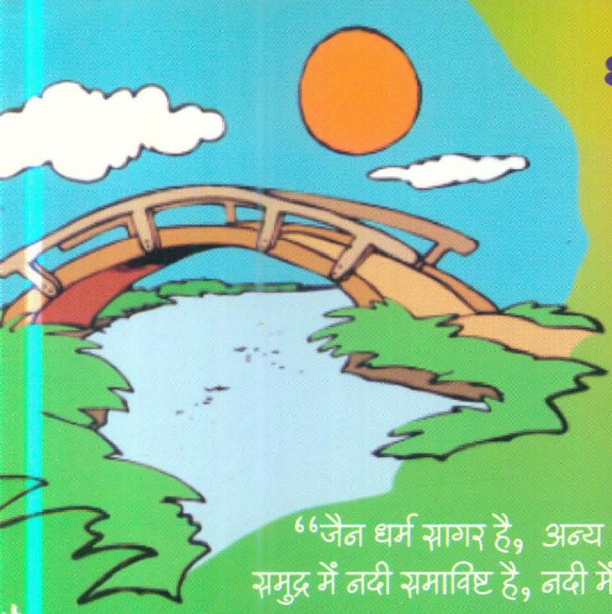

"जीवों का सत्कार तथा
पापों का धिक्कार यह
है जैन धर्म का मौलिक विचार

"जैन धर्म सागर है, अन्य धर्म नदी है
समुद्र में नदी समाविष्ट है, नदी में समुद्र नहीं"

वीतराग परमात्माने आंशिक दया नहीं
संपूर्णतया जीवों के प्रति दयाभाव दिखाया है'

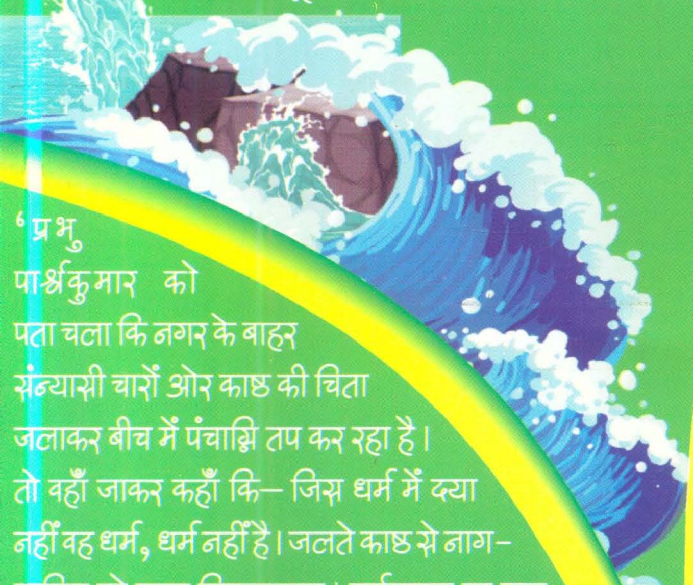

'प्रभु
पार्श्वकुमार को
पता चला कि नगर के बाहर
संन्यासी चारों ओर काष्ठ की चिता
जलाकर बीच में पंचाग्नि तप कर रहा है।
तो वहाँ जाकर कहाँ कि– जिस धर्म में दया
नहीं वह धर्म, धर्म नहीं है। जलते काष्ठ से नाग–
नागिन को बाहर निकलवाया। सर्पयुगल पर दया
करके नवकार महामंत्र सुनाया। जिसके प्रभाव से
मरकर धरणेन्द्र–पद्मावती के रूप में प्रगट हुए।

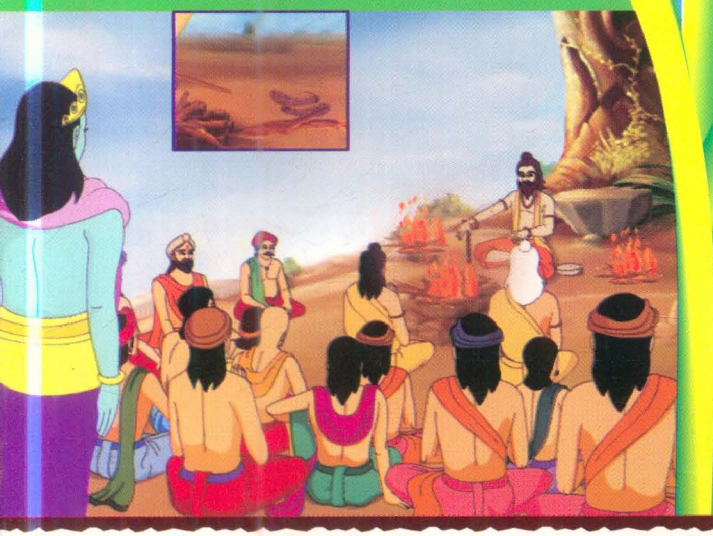

जहाँ
प्रेम वहाँ त्याग
होगा ही। त्याग न होता हो
तो प्रेम दंभ है लेकिन इससे बढ़कर
है श्रद्धा मेरा जैसा स्वरूप है वैसा ही सबका
है। यह भाव ही दयाभाव को जागृत रखता है।

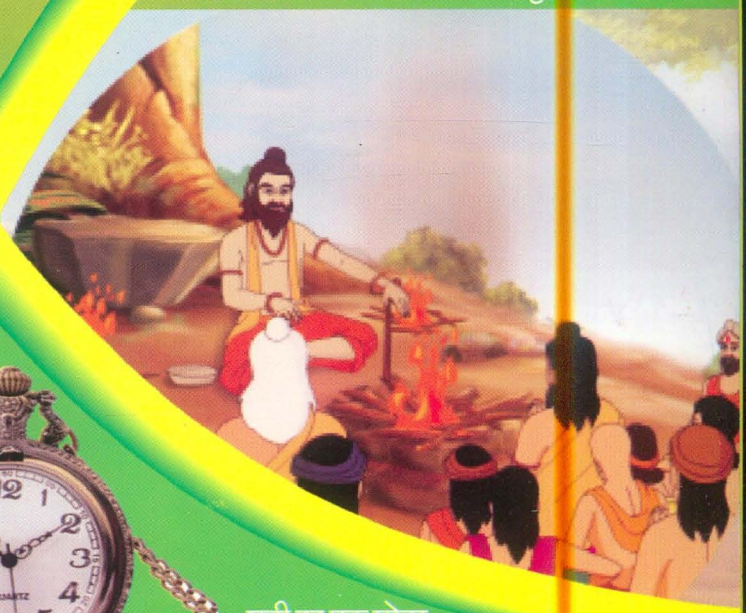

घड़ी का एक छोटा
स्क्रू निकल गया कि घड़ी
बंद। हमारी जीवन
घड़ी भी ऐसा ही है 1 जीव का धिक्कार
आराधना घड़ी बंद, 1 जीव
का सत्कार आराधना
घड़ी शुरू।

शेर पानी
में प्रतिबिंबित अपने जैसे
अन्य शेर को देखकर मारने हेतु
तत्पर हुआ और वह स्वयं ही मर गया। अन्य
जीवों को मारना अर्थात् स्वयं को ही दंडीत
करना...। क्योंकि उसका फल कभी न कभी हमें ही
भुगतना है। जैसा बोओगे वैसा पाओगे।

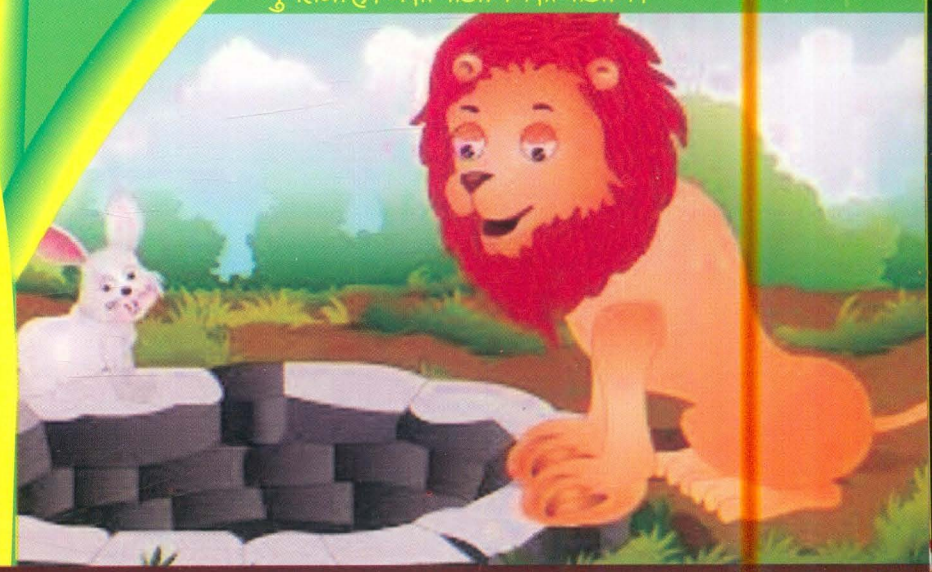

दीपावली पर्व प्रभु वीर का निर्वाण दिन, पावापुरी तीर्थ में अंतीम 16 प्रहर 48 घंटे की देशना देकर भव्य जीवों को आगामी भावी के भावों को दिखाया। प्रभुवीर के अत्यन्त ही निकट के श्री गौतमस्वामी को उस समय देवशर्मा को प्रतिबोध हेतु भेजा, जहाँ पर देवशर्मा को प्रभु की आज्ञा से प्रतिबोध किया। उस समय वीर निर्वाण के समाचार मिलते ही गौतम स्वामी विलाप करने लगे आखिर में भान हुआ प्रभु वीतरागी है, मैं रागी था...। राग दूर हुआ और उनकों भी केवलज्ञान हुआ। अनंत लब्धिनिधान श्री गौतमस्वामी का रास नूतन वर्ष पर सुनते है। नव स्मरण का पाठ करके शुभ संकल्प करना चाहिए।

दीपावली एवं नूतनवर्ष

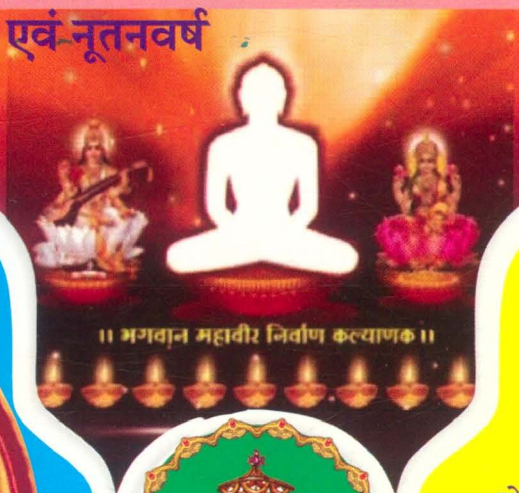

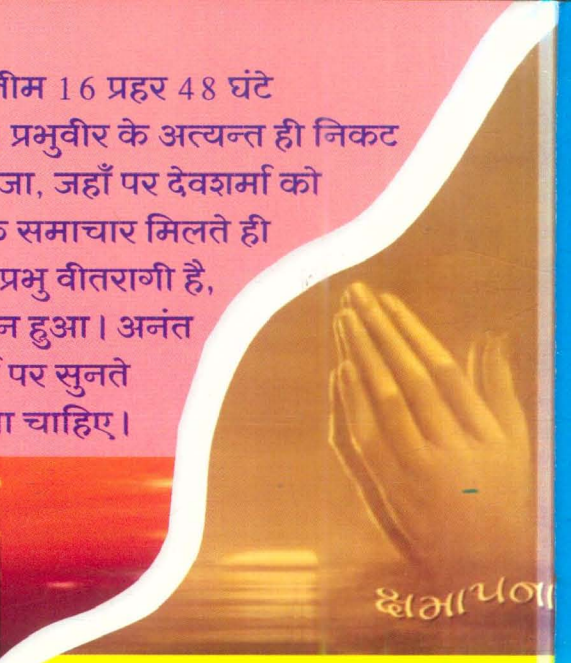

शाश्वती नवपद आयंबिल की ओली एक वर्ष में दो बार आती हैं इसकी आराधना आसोज सुदी से प्रारंभ की जाती है। यह पर्व शाश्वत है। भरत क्षेत्र तो साथ में महाविदेह क्षेत्रों में भी इसकी आराधना की जाती है। करीबन 11 लाख वर्ष पूर्व में श्री श्रीपाल और मयणा सुन्दरी ने इसकी आराधना करी थी। आधि-व्याधि तथा उपाधि-हर्ता यह सिद्धचक्र का अपूर्व प्रभाव है।

नवपद

सिद्धचक्र यंत्र यंत्राधिराज है
नवकार मंत्र मंत्राधिराज है
शत्रुंजय तीर्थ तीर्थाधिराज है
तो पर्युषण पर्व पर्वाधिराज है
इस महापर्व में साधर्मिकों का मेला सा लगता है, दान-शील-तप तथा भाव धर्म की साधना इन दिनों में अधिक की जाती है। जीवदया साधर्मिक भक्ति तथा क्षमापना जैसे कर्तव्यों का पालन इन दिनों में किया जाता है। कल्पसूत्र शास्त्र का गुरू मुख से श्रवण किया जाता है।

क्षमा पर्व

अक्षय तृतीया

इस अवसर्पिणी काल में अज्ञान अंधकार को दूर करने वाले सर्व प्रथम राजा,प्रथम साधु, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान। दीक्षा के पश्चात प्रभु रोज भिक्षा हेतु निकलते है किंतु दान धर्म (सुपात्र दान) से अनजान लोग भिक्षा में हीरा-मोती-माणेक-जवेरात-स्त्री आदि देते थे जबकि इन चीजों का खप प्रभु को नहीं था .... 400 दिन के उपवास हो गये श्री श्रेयांसकुमार को प्रभु के दर्शन से जातिस्मरण ज्ञान हुआ। ज्ञान से प्रभु आहार हेतु भ्रमण कर रहे है यह जानकर ताजे भेट आए हुए निर्दोष 108 इक्षुरस के घड़ों से पारणा करवाया। उसी स्मृति में आज वर्षीतप किया जाता है उसका पारणा प्रभु ने आज के मंगलकारी दिन आखातीज को हस्तिनापुर में किया था। हम भी यह तप करें।

卐 इन पर्वों को मनाये अपूर्व रूप से 卐

चरम शासनपति प्रभु महावीर स्वामी ने संसार का त्याग करके चारित्र जीवन का स्वीकार किया दीक्षा लेने के बाद लेटना नहीं, बोलना नहीं, बैठना नहीं, त्रिसूत्री साधना का शुभारंभ हुआ, साढ़े बारह साल की सुदीर्घ भीष्म तपश्चर्या के पश्चात् वैशाख सुदी दशमी को प्रभु ने केवलज्ञान पाया। समवसरण की रचना हुई प्रथम देशना में किसी को विरति का परिणाम जागृत नहीं हुआ अतः प्रथम देशना निष्फल मानी गई किंतु दुसरे ही दिन इन्द्रभूति आदि कुल ग्यारह गणधर उनके शिष्यों सहित 4400 को संयम देकर एक साथ पूर्ति कर दी ... वैशाख सुदी 11 के दिन शासन की स्थापना हुई ... प्रभु ने मोक्षमार्ग का प्रवर्तन किया, इस दिन हम भी भव्य रूपसे सभी मिलकर शासन स्थापना दिन मनाये।

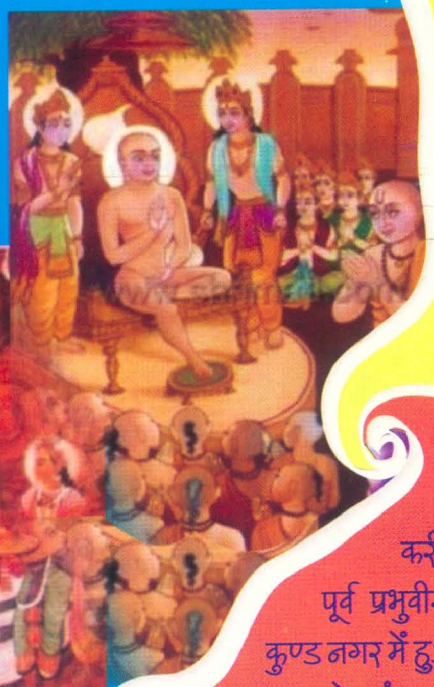

वैशाख सुदी 11
शासन स्थापना दिन

जैन ध्वज वंदन

तर्ज : वंदे मातरम्

प्रत्येक पर्वों में शासन गीत का सूर हो
प्रत्येक व्यक्ति के मुहँ पर शासन का नूर हो

महावीर की संतान है, हम महावीर के अनुयायी है।
सारे जग में वीर प्रभु का, शासन जय जयकार है॥
जैनम् जयति शासनम्॥ 1॥

सब जीवों की रक्षा करना, महावीर का आदेश है।
दया हमारा धर्म है, क्षमा हमारा कर्म है॥
सारे जग में वीर प्रभु का .... ॥ 2॥

रोहणिया जैसा चोर लुटेरा, उसको प्रभु ने तारा था,
अर्जुनमाली था घोर पापी, उसको भी उगारा था।
क्रोधी विषधर चण्डकौशिक को, प्रभु ने ही सुधारा था।
आओ झण्डा जिनशासन का, फहराने की बारी है॥
सारे जग में वीर प्रभु का .... ॥ 3॥

मिटा देंगे हम हस्ती उनकी, जो हमसे टकरायेगा।
अहिंसा की टक्कर में देखों, हिंसा नाम मिट जाएगा।
गली-गली और गाँव-गाँव में, बच्चा-बच्चा गाएगा।
वीर प्रभु का शासन पाकर, मुक्ति सुख को पाएगा॥
सारे जग में वीर प्रभु का .... ॥ 4॥

ना समझो तुम कायर हमको, हम शेरों के भी शेर है।
न्यौछावर कर देंगे तन-मन, वीरों के भी वीर है।
प्राण फना हो जावे चाहे, मरने को वडवीर है।
जिनशासन का झण्डा ऊँचा, लहराओ तैयारी है॥
सारे जग में वीर प्रभु का .... ॥ 5॥

चैत्र सुदी 13 प्रभु वीर का जन्म कल्याणक

आज से करीबन 2600 वर्ष पूर्व प्रभुवीर का जन्म क्षत्रिय कुण्ड नगर में हुआ... मध्य रात्रि में अज्ञान के अंधकार को मिटाने दिव्य प्रकाश पुंज का जन्म हुआ। प्रभु ने जन्म लिया तब देवी-देवता-इन्द्र-नरेन्द्र सभी आनंदीत हुए और मेरू पर ले जाकर देवों ने जन्माभिषेक किया। हम भी सभी जीवों को सुख देने वाले इस कल्याणक पर्व को प्रभुवीर की भव्य अंगरचना-झाकियों से युक्त विराट रथयात्रा, अनुकंपा दान आदि से शासन प्रभावना युक्त मनाकर वीर शासन की वृद्धि एवं प्रभावना करें।

अग्नि पवित्र मानी गई है उसे फूंककर बुझाना हमारी परंपरा नहीं है।
मन्दिर में भी अखंड दिपक को प्रगट रखने हेतु व्यवस्था करते है।
केक काटना हमारी संस्कृति नही ं हमारी संस्कृति जोड़ने की है।
घर का पुत्र मरने पर कहते है दिपक-चिराग बुझ गया।
जन्मदिन पर दिया बुझाकर, केक काटकर हम अपशुकन क्यों करें.?
धार्मिक आयोजन, तीर्थयात्रा, दानादि संकल्प से हमें जन्मदिन सफल करना है
या....फिर ?
सोंचे !

जन्मदिन पर दिया (मोमबत्ती) बुझाना हमारी परंपरा नहीं है

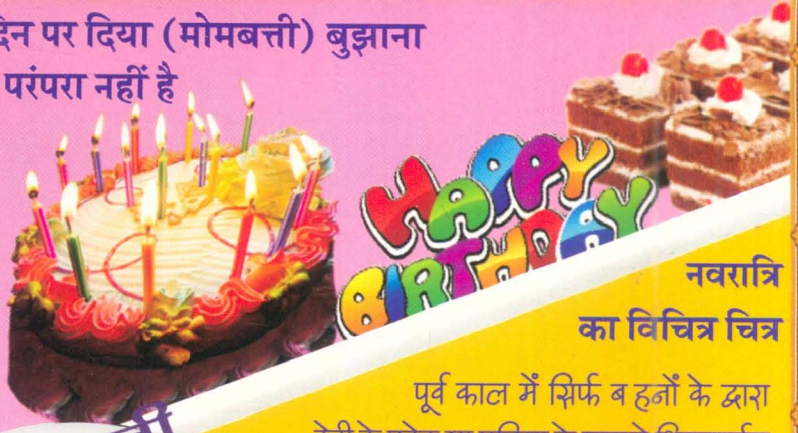

उत्तर खोजतीं

नवरात्रि का विचित्र चित्र

पूर्व काल में सिर्फ ब हनों के द्वारा देवी के फोटू या प्रतिमा के सामने शिस्तपूर्वक शालिन वस्त्रों में गरबे-रास खेले जाते थे। किंतु आज पूर्णरूप से जिसमें विकृति छा गयी है ऐसी नवरात्रि से हमें बचना है, उद्भट वस्त्रों में युवक-युवतियाँ रात्रि में साथ में नाचते है जो बिलकुल अनुचित हैं। विलासी वातावरण, विजातिय का संग और अभद्र-उद्भट वेष ऐसे वातावरण में आप अपने संतानों को भेज रहे हो तो सोचिए पवित्रता अपने संतान टिका पाँएंगे ? नवरात्रि लवरात्रि बनकर कहीं हमें भवयात्री न बना जावे ?

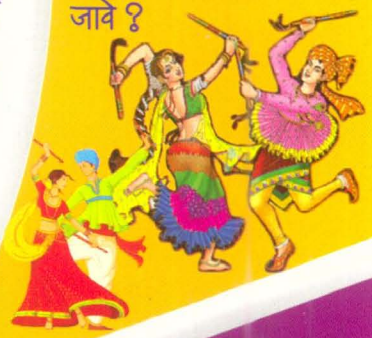

14 जनवरी-मकर संक्रान्ति

बच्चे से लगाकर बड़े तक छत पर चढ़कर पतंग उड़ाने का आनन्द लूटते है किंतु यह आनंद कई पक्षीयों के जीवन जीने का आनन्द लूट लेता है। काँच से तीक्ष्ण बनी डोरी-धागा मूक पक्षीयों के उड़ान मार्ग में अवरोध सर्जता है ... पंख-गले आदि कट जाते है, पांव में पंजे में धागा फँसने पर नीचे गिर जाते है जहाँ मूक जीवों की कुत्ते आदि प्राणी द्वारा जान चली जाती है। इन पैसों से अगर जीवदया की जावे तो ?
सोचे !

31 दिसम्बर पाप का अंबर – दुर्गति में नंबर

थर्टी फस्ट के रूप में अभी-अभी नया भारत देश में प्रचलित हुआ यह दिन अंग्रेजों का त्यौहार है हमारा नहीं। प्रचूर पापलीला जिसमें बढ़ रही हो ऐसे दिन हम क यों मनाये ? डी.जे. साउण्ड पार्टी में मौज-मस्ती, उत्तेजित करनेवाला पूरा वातावरण तथा मध्यरात्रि में सबकुछ करने की दी जाती 1 मिनिट की छूट ... यह हमारी पवित्रता को लूट रहा है ... सोचिए ? अपन यह दिन मना सकते है क्या ?

एक प्रश्नावली

अप्रेल फूल

प्रभु महावीर ने अठारह पापस्थानक बताये है। जिसमें दूसरा पापस्थानक है मृषावाद अर्थात् झूठ बोलना। इस दिन मजाक में झूठ बोला जाता है फिर भी वह असत्य भाषण होने से पाप है। कभी कभार आघात जनक वचन भारभूत बन जाते है। दो देवों ने आकर स्नेह परिक्षा हेतु लक्ष्मण को राम के मरने के समाचार दिये और भातृप्रेम से लक्ष्मण की वही आयु पूर्ण हो गई। अतः महाअनर्थकारी असत्य वचन का त्याग कर सत्य-हितकारी-प्रिय वचन बोलना चाहिए।
क्यों ... ! अप्रेल फूल नहीं करोंगे ना ?

जिन दर्शन

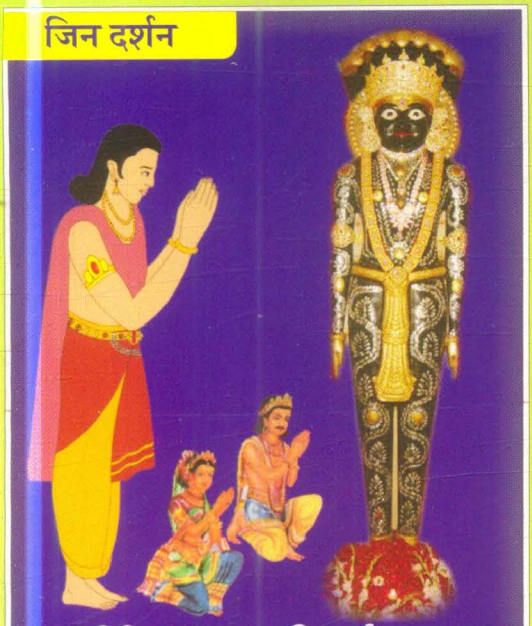

प्रतिदिन सुबह-शाम जिनदर्शन करना मधुर स्वरों से प्रार्थना करनी चाहिए भगवान परमोपकारी-हितकारी तो सुखकारी है
प्रभु के दर्शन से दुःखों का नाश होता है।

जिन पूजा

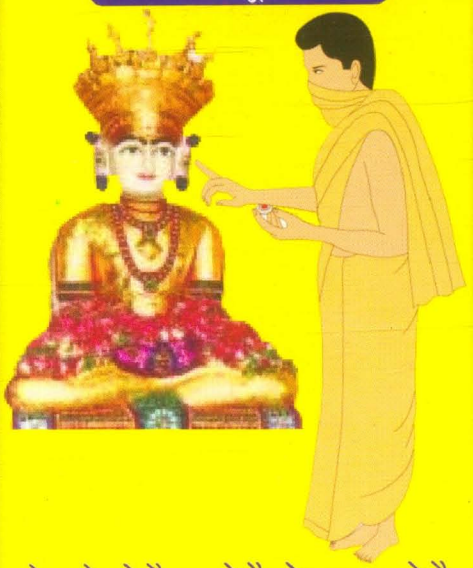

रोज खेलते है, न्हाते है, पेटपूजा करते है तो प्रभु पूजा क्यो नही ?
प्रतिदिन स्वच्छ नये अच्छे कपड़े पहनकर पूजा करनी चाहिए पूजा करने से इच्छित प्राप्ति तो मोक्ष सुख भी मिलता है।

सामायिक

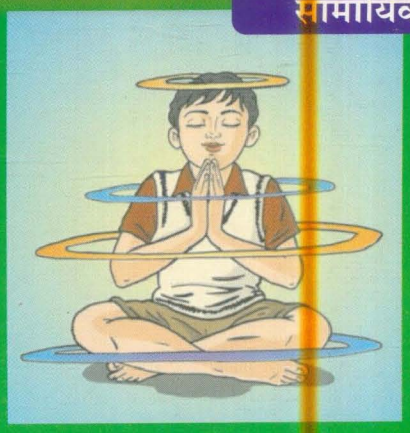

समता पूर्वक 48 मिनिट तक की जाती यह क्रिया है।
ऊनी बेटके पर धूली हुई धोती या कपड़े पहनकर चरवला-मुहपत्ति लेकर शांतिपूर्वक करना चाहिए। विकथा-कषाय तथा हंसना-दौड़ना-खाना-पीना त्याग करना चाहिए।
एक सामायिक से 925925925 पल्योपम का दिव्य सुख प्राप्त होता है।
एक पल्योपम = असंख्य वर्ष

क्या हम भूल सकते है ?

प्रतिक्रमण

घर एवं शरीर स्वच्छ न करें तो गंदगी से भर जाता है। वैसे आत्मा पर प्रतिदिन लगता कर्म का कचरा रोज प्रतिक्रमण करके साफ करना चाहिए अन्यथा आत्मा मलिन हो जाती है। दिन के पाप मिटाने शाम का तो रात के पापों की शुद्धि हेतु सुबह का प्रतिक्रमण करना चाहिये।

पाठशाला गमन

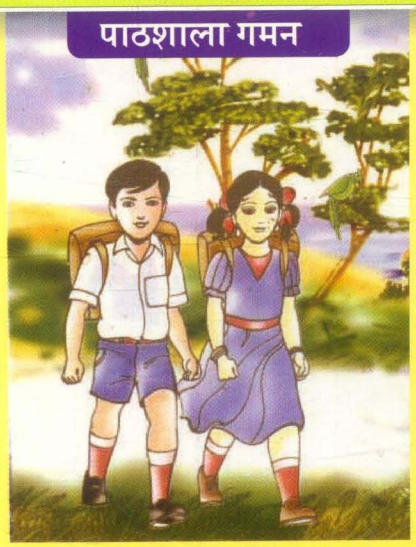

शरीर मजबूत बनाने जीमखाना-व्यायामशाला में हम जाते हैं किंतु आत्मा को पुष्ट करने सद्ज्ञान की प्राप्ति हेतु प्रतिदिन पाठशाला जाना चाहिए। जहाँ हमें विनय-विवेक तथा अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं। गुरूओं का विनय करना चाहिए।

प्रवचन श्रवण

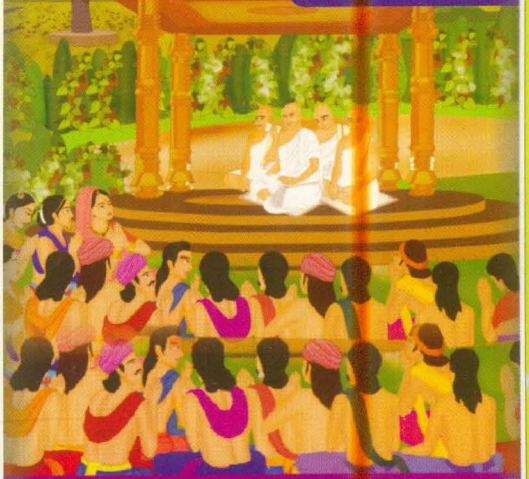

हमें नित्य शुद्ध मुख से विनय पूर्वक जिनवाणी का श्रवण करना चाहिए। उपदेश श्रवण से उन्मार्ग का उन्मूलन तथा सन्मार्ग की प्राप्ति होती है। तृप्त मन को शान्ति तथा जीवन में वैराग्य जागृत होता है। जिनवचन श्रवण से जीवन वन उपवन बनता है।

गुरू वंदन

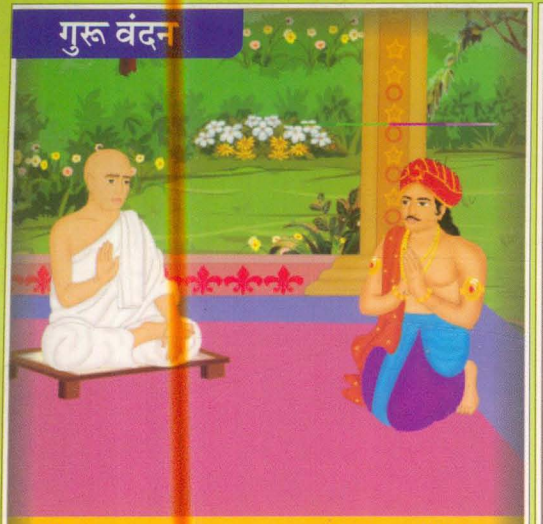

पाँच महाव्रतधारी साधु-साध्वीजी भगवंतों के चरणों में हमें वन्दना करनी चाहिए। जिससे पापों की निकंदना होती है। श्री कृष्ण महाराजा ने 18000 साधुओं को भाव-श्रद्धा पूर्वक वंदन किए जिसके प्रभाव से 7वीं नरक के योग्य कर्मों को 4 नरक तोड़कर 3री नरक योग्य हो गये।

गरम पानी

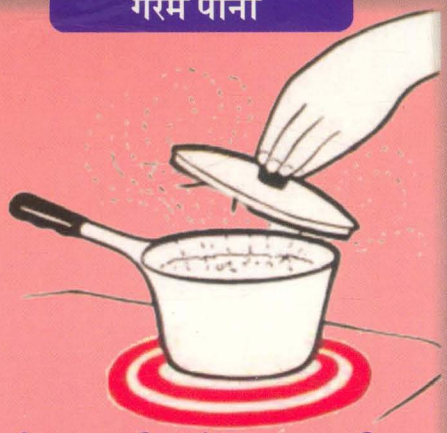

पानी छानकर फिर उसे उबालना चाहिए। पानी को चाय की तरह 3 उबाले लाकर गरम करना चाहिए। आजकल डॉक्टर भी गरम पानी पीने हेतु कहते है जबकि परमपिता प्रभु ने बताया कि उबले पानी में अमुक घंटे तक नये जीव पैदा नहीं होते है ऐसा पानी ठण्डा करके हमें (अनुकुलतानुसार) वापरना चाहिए। वेस्ट यूज नहीं करना कम से कम उपयोग करते निर्वाह करना चाहिए।

माता पिता के चरण स्पर्श

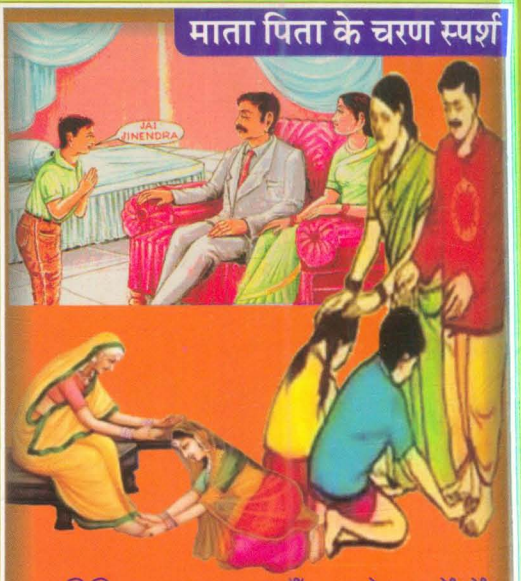

प्रतिदिन प्रातः उठकर माँ-बाप के चरणों में गिरकर चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेना चाहिए उनकी कृपा से हमें कार्यों में सफलता मिलती है। तीर्थंकर प्रभुवीर भी माँ-बाप का विनय-औचित्य करते थे। तो हम क्यों नहीं?

क्या हम भूल सकते है ?

तीर्थ यात्रा

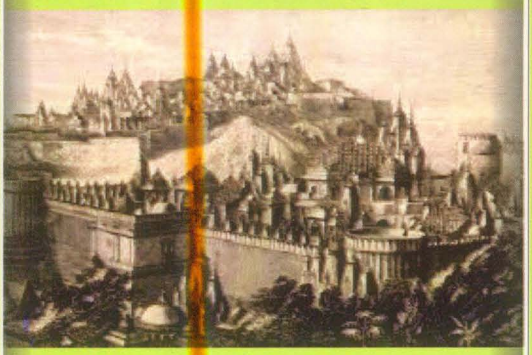

हील स्टेशन पिकनिक पॉइन्ट, एसएलवर्ल्ड इत्यादि मौज-मस्ती के स्थान हमारे लिए अशुभ कर्म बंध का कारण बनता है तो कल्याणक भूमि की स्पर्शना प्राचीन जैन तीर्थों की यात्रा हमारे अशुभ कर्मों का क्षय करती है सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तथा उसे निर्मल बनाती है।

रात्रि चिंतन

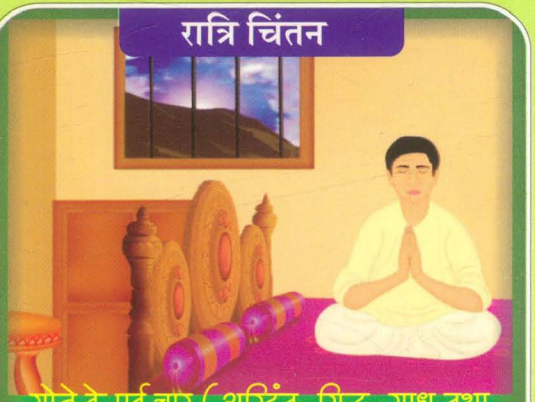

सोने के पूर्व चार (अरिहंत-सिद्ध-साधु तथा धर्म) का शरण स्वीकार करना। रात्रि में काल कर जाऊँ तो आगार, उपधि-देह को छोड़ता हूँ अर्थात् उससे अब मुझे कोई निस्बत नहीं है। मूर्छा का त्याग करके, बाई करवट, पश्चिम में सिर तथा दक्षिण में पाँव न करते हुए प्रातः जल्दी उठने के प्रण के साथ सोना प्रातः उठकर में कहाँ से आया हूँ कहाँ जाने वाला हूँ ? मुझे क्या करना शेष है ? इत्यादि धर्मचिंतन करना सोते सात (भय दूर करने) तथा उठते आठ (कर्मनाश हेतु) नवकार गिनना।

प्राप्ति स्थान

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ

पोस्ट - मेवानगर - 344025
स्टेशन - बालोतरा,
जिला-बाड़मेर (राज.)
मोबा. : 02988-240005

मुद्रक

मनोज लोढ़ा

182, कस्तुरबा नगर, मेन रोड़
रतलाम - 457 001 (म. प्र.)
फोन : 089895-26699
093291-70999
Email :: manojlodha9@gmail.com